ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान।
हक देत याद कई विध सों, हाए हाए ऐसी लगी नींद निदान।।२८।।

धनी के इन सुखों की और इन एहसानों की जरा भी चाह नहीं आती है। श्री राजजी महाराज तुम्हें कई तरह से याद दिलाते हैं। हाय! हाय! तुम्हें फिर भी ऐसी फरामोशी की नींद कैसे लगी है?

ना तो ऐसी मेहेर इस्क सों, हक करत आपन सों।
जगाए के पेहेचान सब दई, हाए हाए आवत ना होस मों।। २९ ।।

नहीं तो श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर इतनी कृपा अपने प्यार से करते? जगाकर घर की सब पहचान देते हैं। हाय! हाय! हम फिर भी होश में नहीं आते।

महामत कहे ए मोमिनों, ए देखो हक की मेहेर।
जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। यदि उनकी एक मेहर को भी समझ लें तो चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड जहर के समान लगेगा।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। १८१७ ।।

परिकरमा नजीक अर्स के

बेवरा अगली भोम का, मेहेराव और झरोखे।
खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए।। १ ।।

पहली भोम के मेहराब और झरोखे जो दीवार में शोभा देते हैं, उनकी शोभा कैसे कहूं?

गिरदवाए मेहेराव झरोखे, फेर देखिए तरफ चार।
इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार।। २ ।।

रंग महल के चारों तरफ मेहराब और झरोखे आए हैं। इनकी शोभा बेशुमार है, इसलिए इस मुख से कैसे वर्णन करूं?

बेसुमार जो फेर फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे।
तो सब्द में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनों के।। ३ ।।

बार-बार बेशुमार कहूं, यह बात समझ में आती नहीं, इसलिए इसको सीमा में लाकर कह रही हूं ताकि मोमिनों की समझ में आ जाए।

पार न कहूं अर्स का, सो कह्या बीच दिल मोमिन।
ए विचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन।। ४ ।।

परमधाम का पारावार नहीं है। उसकी शोभा मोमिनों के दिल में बताई है। यह विचार करके अखण्ड परमधाम देखो जो मोमिनों के दिलों में है।

हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहें।
हक देत लदुन्नी मेहेर कर, हक अर्स आवे बीच जुबांए।। ५ ।।

परमधाम के ठाट-बाट का वर्णन किए बिना श्री राजजी महाराज की याद दिल में नहीं आती। श्री राजजी महाराज जब कृपा करके जागृत बुद्धि का ज्ञान देते हैं तभी यहां की जबान परमधाम और श्री राजजी महाराज की साहिबी का वर्णन कर पाती है।

Nijanand App

दोऊ तरफ बड़े द्वार के, ए जो हांसें कहीं पचास।
सामी चौक चांदनी, क्यों कहूं खूबी खास।। ६ ।।

रंग महल के दरवाजे के दोनों तरफ के पचास हांसों की और चांदनी चौक की खूबी का कैसे वर्णन करूं?

देहेलान ऊपर द्वार के, जो ऊपर चबूतरे दोए।
चार चार मन्दिर दोऊ तरफ के, ऊपर लग चांदनी सोए।। ७ ।।

रंग महल के ठोस चबूतरे के ऊपर दरवाजे के दोनों तरफ दो चबूतरे आए हैं जो चार-चार मन्दिर के लम्बे दो मन्दिर के चौड़े हैं। यह ऊपर चांदनी तक गए हैं।

हांस पचास अगली दिवालें, दोऊ तरफों पचीस पचीस।
दो मेहराव बीच झरोखे, हर हांसें मंदिर तीस।। ८ ।।

रंग महल के पूरब की दीवार पचास हांस की है। मध्य के दरवाजे के दोनों तरफ पच्चीस-पच्चीस मन्दिर के हांस हैं और बाकी हांसों में तीस-तीस मन्दिर हैं। हर मन्दिर में दो-दो मेहराब और एक-एक झरोखा बीच में है।

हर मंदिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए।
आए लग्या बन दिवालें, देत मीठी खुसबोए।। ९ ।।

हर मन्दिर का झरोखा बेशुमार शोभा वाला है। इसका बयान कैसे करें? इस झरोखे से वनों की डालियां आकर लगी हैं। सुन्दर मीठी खुशबू होती है।

दोए भोम कही जो बन की, खिड़की मोहोल तिन बन।
भोम दूजी मोहोल झरोखे, इत बसत पसु पंखियन।। १० ।।

वनों की दूसरी भोम रंग महल की पहली भोम के झरोखों से लगती है। वन की दूसरी भोम की डालियां जो झरोखे से लगती हैं, उनमें पशु-पक्षियों का वास है।

उतर झरोखों से जाइए, दूजी भोम बन माहें।
बन सोभे पसु पंखियों, कई हक जस गावें जुबांए।। ११ ।।

पहली भोम के झरोखे से ही वन की दूसरी भोम में जाते हैं। पशु पक्षी श्री राजजी महाराज का गुणगान करते दिखाई देते हैं। जिससे वन शोभायमान है।

चल जाइए सातों घाट लग, खूबी देख होइए खुसाल।
कई विध हक जिकर करें, पसु पंखी अपने हाल।। १२ ।।

सातों घाट तक चलकर गए तो यह सुन्दरता बहुत प्रसन्न करने वाली है। यहां पशु-पक्षी कई तरह से ही श्री राजजी महाराज का गुणगान करते हैं।

इस्क जुबां बानी गावहीं, खूब सोभित अति नैन।
मगन होत हक सिफत में, मुख मीठी बानी बैन।। १३ ।।

वह अपनी जबान से इश्क भरी रसीली वाणी गाते हैं। उनके नेत्र बड़े सुन्दर लगते हैं। उनकी मीठी वाणी श्री राजजी महाराज की महिमा गाने में सदा लगी रहती है।

Nijanand App

किन बिध कहूं पसु पंखियों, परों पर चित्रामन।
मुख बोलें हक के हाल में, तिन अंबर भरे रोसन।। १४ ।।

पशु-पक्षियों के परों के चित्रों की शोभा कैसे कहूं? वह अपनी जबान से श्री राजजी महाराज की वाणी ही बोलते हैं। इनके परों की शोभा आसमान तक झलकती है।

जैसी सोभा पसु पंखियों, सोभा तैसी भोम बीच बन।
सो सोभा मीठी हक जिकर, यों हाल खुसाल रात दिन।। १५ ।।

जैसी शोभा पशु-पक्षियों की है, वैसी ही शोभा वनों की है। जहां वह रात-दिन खुश रहकर सुन्दर मीठी बोली से जिक्र-ए-सुभान करते हैं।

सोभा जाए ना कही बन पंखियों, और जिकर करत हैं जे।
तो हक हादी रूहें मिलावा, कहूं किन बिध सोभा ए।। १६ ।।

वन के पक्षियों की शोभा जो जिक्र-ए-सुभान करते हैं, कही नहीं जा सकती। तो जहां श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें मिलकर बैठे हैं, उसका बयान कैसे करूं?

इतथें चल के जाइए, ऊपर दोऊ पुलन।
ए खूबी मैं क्यों कहूं, जो नूरजमाल मोहोलन।। १७ ।।

यहां से चलकर जमुनाजी के दोनों पुलों पर चले। यह दोनों पुल श्री राजजी महाराज के नूर से ही हैं। इनकी खूबी मैं कैसे कहूं?

सात घाट कहे बीच में, माहें पसु पंखी खेलत।
तले भोम या ऊपर, बन में केलि करत।। १८ ।।

इन दोनों पुलों के बीच सात घाट आए हैं जहां पशु-पक्षी आपस में क्रीड़ा करते हैं। नीचे की भोम हो या ऊपर वन में हो, सभी जगह वन में पशु-पक्षी आनन्द करते हैं।

केल लिबोई अनार, बांईं तरफ खूबी देत।
जांबू नारंगी बट दाहिने, नूर सनमुख सोभा लेत।। १९ ।।

रंग महल के दरवाजे की बाईं तरफ केल, लिबोई और अनार के घाट आए हैं तथा दाईं तरफ जाम्बू, नारंगी और बट के घाट की शोभा है। ऐसे घाट सामने अक्षर की तरफ भी शोभा देते हैं।

दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट बिराजत।
बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत।। २० ।।

दोनों पुलों के बीच में सात घाट और उनके बीच जमुनाजी के ऊपर पाट घाट आया है। यह रंग महल और अक्षरधाम के बीच आमने-सामने आए हैं। इनका तेज आकाश तक जाता है।

जो घड़नाले पुल तले, दस दस दोऊ के।
दस नेहेरें चलें दोरी बंध, बड़ी अचरज खूबी ए।। २१ ।।

पुल के नीचे जमुनाजी का जल दस घड़नालों से निकलता है और यह दस घड़नाले दूसरे पुल में भी हैं। पानी सीधा जाता है। यह बड़ी अजब शोभा है।

Nijanand App

दोऊ पुल देख के आइए, निकुंज मंदिरों पर।
इत देख देख के देखिए, खूबी जुबां कहे क्यों कर।। २२ ।।

दोनों पुलों को देखने के बाद कुंज-निकुंज के मन्दिरों में आइए। यहां की खूबी बेमिसाल है। जिसका जबान से वर्णन नहीं हो सकता।

आगूं इतथें हिंडोले, जित चौकी बट पीपल।
चार चौकी बट हिंडोले, इतथें ना सकिए निकल।। २३ ।।

अब यहां से आगे चलकर बट-पीपल की चौकी के हिंडोले देखिए। इनकी ऊपरा ऊपर चार छतें हैं। इसे छोड़कर जाने की इच्छा ही नहीं होती।

दूजी भोम जो चौकियों, दौड़ जाइए तितथें।
बीच मेहेरावों कूद के, उतर आइए अर्स में।। २४ ।।

बट-पीपल की चौकी की दूसरी भोम से दौड़कर जाएं और सामने दरवाजों से रंग महल में चले जाएं।

पेहेली भोम के झरोखे, सो दूजी भोम लग बन।
ए झरोखे के बराबर, भोम दूजी हिंडोलन।। २५ ।।

पहली भोम के झरोखे से वन की दूसरी भोम में जाया जाता है। झरोखों की ऊंचाई के बराबर दूसरी भोम के हिंडोले आए हैं।

पेहेली भोम फूल बाग लों, दिवाल देखिए दिल धर।
फिरते मेहेराव झरोखे, बन आवे अंदर थे नजर।। २६ ।।

पच्छिम दिशा में यहां रंग महल की पहली भोम की दीवार से लगते फूलबाग को देखो। रंग महल की पिछली तरफ मेहराब और झरोखों से फूलबाग दिखाई देता है।

फेर देखिए फूल बाग लों, हर मंदिर मेहेराव दोए।
बीच बीच उचेरा झरोखा, कहूं किन मुख सोभा सोए।। २७ ।।

फूलबाग को फिर से देखें तो रंग महल के मन्दिर में दो-दो मेहराब और एक-एक झरोखा है। इसकी खूबी कैसे कहूं?

भोम तले बन हिंडोले, अति सोभित इतथें।
मेहेराव झरोखे सुन्दर, जब बैठ देखिए बन में।। २८ ।।

फूलबाग के एक भोम नीचे नूरबाग के सामने अन्न वन में पांच बड़े पेड़ों में सुन्दर हिंडोले शोभा देते हैं। जब वन में बैठकर देखें तो रंग महल के सुन्दर मेहराब और झरोखे दिखाई देते हैं।

कई जिकर करें जानवर, मीठे स्वर बयान।
इस्क खूबी अति बड़ी, सिफत बका सुभान।। २९ ।।

यहां पर जानवर सुन्दर मीठे स्वर में श्री राजजी का जिक्र करते हैं। इनके इश्क की खूबी बेशुमार है, क्योंकि यह सदा श्री राजजी महाराज के जिक्र में लगे रहते हैं।

Nijanand App

इत क्यों कहूं खूबी हिंडोले, जित हींचें रूहें हादी हक।
बयान न होए एक जंजीर, जो उमर जाए मुतलक।। ३० ।।

यहां के हिंडोलों की महिमा कैसे बताएं जहां श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें झूलती हैं। यहां की एक जंजीर का वर्णन कई उम्र बीत जाने पर भी नहीं हो सकता।

ए भोम तले की दिवाल में, मेहेराव आवे न सिफत मों।
देख देख के देखिए, फेर चलिए फूल बाग लों।। ३१ ।।

रंग महल की पहली भोम की दीवार में जो दस मेहराबें बनी हैं उनकी शोभा नहीं कही जा सकती। इनको देखकर नीचे नूरबाग की शोभा देखकर फिर ऊपर फूलबाग में आ जाएं।

दूसरी भोम जो अर्स की, सो तीसरी भोम लग बन।
जाइए झरोखे से हिंडोले, ए सोभा कहूं मुख किन।। ३२ ।।

रंग महल की दूसरी भोम बट-पीपल की चौकी की तीसरी भोम से लगती है। रंग महल के झरोखे से चौकी के हिंडोलों तक जाएं। यहां की शोभा कैसे कहूं?

चौथी भोम के बन से, जाइए तीसरी भोम अर्स।
ए भोम झरोखे बराबर, ए बन मोहोल अरस-परस।। ३३ ।।

चौकी की चौथी भोम से रंग महल की तीसरी भोम में जाएं। इस भोम के झरोखे चौकी की चौथी भोम के हिंडोलों के सामने हैं।

पांचमी भोम बन चांदनी, अति खूबी लेत इत ए।
चल जाइए चौथी भोम अर्स, मोहोल देखो बैठ झरोखे।। ३४ ।।

वन की पांचवीं भोम जो बट-पीपल की चांदनी है, को रंग महल की चौथी भोम के झरोखों में बैठकर देखो।

बट पीपल की चौकियां, एक घाट लग हद।
लंबी चांदनी फूल बाग लों, ए सोभा न आवे माहें सब्द।। ३५ ।।

बट-पीपल की चौकी की पूर्व की हद नारंगी घाट की पच्छिम को लगती है। चौकी की लम्बी चांदनी पीछे फूलबाग तक आई है। जिसकी शोभा शब्दों से नहीं कही जा सकती।

हर हांस तीस मंदिर, हर मंदिर झरोखा एक।
दोऊ तरफ दो मेहेराव, मन्दिरों खूबी विसेक।। ३६ ।।

रंग महल के हर हांस में तीस मन्दिर हैं और हर मन्दिर में एक झरोखा है। झरोखे के दोनों तरफ दो मेहराबें हैं। जिनकी खूबी बेशुमार है।

हर हांस साठ मेहेराव, इनों बीच बीच झरोखा।
भोम तले अति रोसनी, खूबी क्यों कहूं सोभा बका।। ३७ ।।

एक हांस में इस तरह से साठ मेहराब आते हैं और बीच में तीस झरोखे आए हैं। रंग महल की पहली भोम की शोभा बेशुमार है। इस अखण्ड परमधाम का वर्णन मैं कैसे करूं?

Nijanand App

इन विध हांसें फिरतियां, चारों तरफों सौ दोए।
चारों तरफ का बेवरा, नेक केहेत हुकम सोए।। ३८ ।।

इस तरह से चारों तरफ घूमकर दो सौ हांस आए हैं। अब श्री राजजी के हुकम से उन चारों तरफ का विवरण बताती हूं।

एक तरफ आगूं द्वार ने, तरफ दूजी चौकी हिंडोले।
फूल बाग तरफ तीसरी, चौथी चबूतरे चेहेबच्चे।। ३९ ।।

रंग महल के पूरब की तरफ बड़ा द्वार है। दूसरी तरफ दक्षिण में बट-पीपल की चौकी के हिंडोले हैं। तीसरी तरफ पच्छिम में फूलबाग है। चौथी तरफ उत्तर में लाल चबूतरा तथा ताड़वन में खड़ोकली का चहबच्चा है।

चार चार नेहेरें जंजीर ज्यों, मिल मिल फिरें गिरदवाए।
बीच बीच सोभित बगीचों, अचरज एह देखाए।। ४० ।।

चार नहरें जंजीर की तरह आपस में मिलकर चलती हैं और उनके बीच सुन्दर बगीचों की शोभा है। यह बड़ी ही लाजवाब शोभा है।

बीच झरोखे कारंजे, चारों तरफों चार चलत।
ए चारों बीच चेहेबच्चे, एकै ठौर पड़त।। ४१ ।।

झरोखों के बीच बैठकर चारों तरफ से फव्वारे दिखाई देते हैं जो सभी बीच के चहबच्चे में गिरते हैं।

कहूं कारंज एक बीच में, एक ठौर उछलत।
सो चारों फुहारे होए के, चारों खूटों गिरत।। ४२ ।।

बीच वाले चहबच्चों के फव्वारे का जल चारों कोने वाले चहबच्चों में गिरता है।

सो ए फूलबाग की, सोभा इन मुख कही न जाए।
नूर जोत फूल पातन की, जानो अंबर में न समाए।। ४३ ।।

इस फूलबाग की शोभा इस मुख से वर्णन नहीं की जा सकती। इनके फूल और पत्तों का तेज आसमान में नहीं समाता।

चार खूंट चारों हांसों, कई जिनसों फूल देखाए।
कई जुगतें पात सोभित, सब खुसबोए रही भराए।। ४४ ।।

फूलबाग का प्रत्येक बगीचा चौरस है और इनमें कई रंगों के फूल दिखाई देते हैं। कई तरह के पत्ते शोभा देते हैं जिनकी सुगन्धि फैल रही है।

फूल कहूं कई रंग के, गिनती न आवे सुमार।
ना गिनती रंग पात की, खूबी क्यों कहूं इनों किनार।। ४५ ।।

कई रंग के फूल हैं जिनकी गिनती नहीं है। यहां पत्तों के रंगों की गिनती नहीं है तो किनारे की शोभा कैसे बताऊं?

Nijanand App

जानो के गंज नूर को, भराए रह्यो आकास।
जब नीके नजर दे देखिए, तब कछू पाइए खूबी खास।। ४६ ।।

लगता है कि यहां का तेज ही आकाश में भरा है। अच्छी तरह से जब नजर से देखें तो एक अजब ढंग की खूबी दिखाई देती है।

विवेक कर जब देखिए, तब पाइए फूल पांखड़ी पात।
कई जिनसें जुगतें कांगरी, नूर आगे देखी न जात।। ४७ ।।

जब विचार कर देखो तो फूल, पंखड़ी और पत्ते और पत्तों की कांगरी कई तरह से शोभा देती है। जिनके तेज के आगे देखा नहीं जाता।

कई जिनस जुगत रंग फूल में, कई जिनस जुगत पात रंग।
नूर बाग खासी हक हादी रूहें, खूबी क्यों कहूं जुबां इन अंग।। ४८ ।।

नूरबाग में कई तरह के रंग एक फूल में दिखाई देते हैं और कई तरह के रंग एक पत्ते में दिखाई देते हैं। जब यहां हक, हादी, रूहें आती हैं, तो उस समय की खूबी का बयान यहां के अंग से कैसे करूं?

ए बाग चौड़ा लंबा सोहना, माहें जुदी जुदी कई जिनस।
कई एक रंगों बगीचे, जानों एक से और सरस।। ४९ ।।

यह नूरबाग का बगीचा लम्बा-चौड़ा बराबर शोभा देता है। जिसके अन्दर तरह-तरह की शोभा है। कई रंग के बगीचे हैं और एक से दूसरा अच्छा लगता है।

एक एक दरखत में कई रंग, यों कई बगीचे विवेक।
कई बगीचे चेहेबच्चे, जानों जो देखों सोई विसेक।। ५० ।।

एक-एक पेड़ में कई रंग हैं। ऐसे कई बगीचे हैं। हर बगीचे में कई चहबच्चे हैं। जो देखें तो वही अच्छा लगता है। एक से दूसरे की शोभा विशेष है।

नेहेरें चलत कई बीच में, चेहेबच्चे बगीचों।
कई बैठकें कारंजों, जल उछलत फुहारों।। ५१ ।।

चहबच्चों और बगीचों में नहरें चलती हैं। कई तरह के फव्वारे चलते हैं। कई तरह की बैठकें बनी हैं।

कई मोहोल मन्दिरों चबूतरे, इत बने हैं बनके।
इत हक हादी रूहें बैठक, अति ठौर खुसाली ए।। ५२ ।।

यहां कई महल, मन्दिर और चबूतरे पेड़ों के ही बने हैं। जहां श्री राजश्यामाजी और रूहों की बैठक होती है और बड़ा आनन्द आता है।

चारों खूंटों बड़े चार चेहेबच्चे, तिन हर एक में कई कारंज।
सब नेहेरें तहां से चलें, वह चेहेबच्चों भर्‌या जल गंज।। ५३ ।।

फूलबाग के चारों कोनों पर चार बड़े चहबच्चे हैं। प्रत्येक में फव्वारे छूटते हैं। सभी नहरें वहां से चलती हैं। चहबच्चों में बेशुमार जल भरा है।

Nijanand App

पांच पांच हांसों बगीचा, भए पचास हांसों बाग दस।
ए सोभा इन जुगतें, याको क्यों कहूं रूप रंग रस।।५४।।

एक-एक बगीचा पांच-पांच हांस (१५० मन्दिर) का लम्बा-चौड़ा है। पचास हांस में इस तरह से दस बगीचे आए हैं। यहां की शोभा का रूप और रंग कैसे बयान करूं?

ए बड़ा बाग ऊपर चबूतरे, तापर बन की दिवाल।
ए नूर फूलन का क्यों कहूं, सेत स्याम नीले पीले लाल।।५५।।

फूलबाग रंग महल के पच्छिम में नूरबाग की छत पर है। इसके तीनों तरफ (उत्तर, पच्छिम और दक्षिण) बड़े वन के पांच वृक्ष घूमते हैं। यहां के फूल सफेद, नीले, पीले, लाल शोभा देते हैं। इनका बयान कैसे करूं?

तले तीन तरफ मेहेराव, ए जो कही दिवाल गिरदवाए।
ऊपर दिवालें बनकी, ए सिफत कही न जाए।।५६।।

फूलबाग के नीचे, उत्तर, पच्छिम, दक्षिण में बड़े वन की पांच पेड़ों की मेहरावें आई हैं। ऊपरा ऊपर भी पांच भोम तक वन की दीवारें हैं। इनकी शोभा कहने में नहीं आती।

इन सौ बगीचों चेहेबच्चे, जुदी जुदी जिनस जुगत।
ए बाग नेहेरें देखते, नैना क्योंए ना होंए तृपित।।५७।।

इन सौ बगीचों के चहबच्चों की अलग-अलग हकीकत है। इस बाग की नहरों को देखकर नेत्र तृप्त नहीं होते।

जो बाग तले चबूतरा, सो छाया बीच दरखत।
बीच अर्स के उसी जुबां, हक आगूं होए सिफत।।५८।।

इस फूलबाग के चबूतरे के नीचे नूरबाग आया है। इस पर भी बड़े वन के पांच वृक्षों की छाया आई है। परमधाम के बीच में श्री राजजी के सामने ही इसकी सिफत का बयान हो सकेगा।

ए बिरिख जो अर्स भोम के, सो अर्सै के हैं नंग।
ए जोत कहूं क्यों इन जुबां, और किन विध कहूं तरंग।।५९।।

यह परमधाम के वृक्ष परमधाम के ही नगों के अनुसार हैं। इनके तेज की तरंगों का वर्णन यहां की जबान से सम्भव नहीं है।

जिमी तले जो दरखत, एह जिनस कछू और।
खूबी फल फूल पात की, किन मुख कहूं ए ठौर।।६०।।

इस फूलबाग के नीचे नूरबाग के पेड़ों की कुछ अलग ही हकीकत है। यहां के फल, फूल, पत्तों की शोभा कैसे कहूं?

रंग जोत खूबी खुसबोए की, क्यों कर कहूं ए बन।
फल फूल पात तले जिमी, जानों सूर हुए रोसन।।६१।।

नूरबाग के रंग, खुशबू, फल, फूल और पत्ते तथा जमीन ऐसी तेजमयी है, लगता है कई सूर्य चमक रहे हैं। इसकी शोभा कैसे कहूं?

Nijanand App

कई नेहेरें कई चेहेबच्चे, कई कारंजें जल उछलत।
कई मोहोल माहें बैठकें, हक हादी रूहें खेलत।। ६२ ।।

नूरबाग में कई तरह की नहरें चलती हैं। फव्वारे चलते हैं। कई महल हैं। कई बैठकें हैं। श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों के खेलने की जगह हैं।

तले बाग जो दरखत, बड़ा बन गिरदवाए।
चारों खूंटों बराबर, खूबी जरे की कही न जाए।। ६३ ।।

इस बाग को घेरकर तीनों तरफ बड़े वन के पांच वृक्ष आए हैं। बगीचा लम्बा-चौड़ा बराबर है। यहां के एक कण की शोभा वर्णन करने में नहीं आती।

तो क्यों कहूं सारे बाग की, जिन की खूबी कही ए।
ऐसा जरा कह्या जिनका, तो क्यों कहूं ठौर हक के।। ६४ ।।

तो फिर बगीचे की शोभा कैसे वर्णन करूं जिसकी इतनी बड़ी सिफत है। बगीचे के एक जर्रे की इतनी खूबी है तो फिर श्री राजजी महाराज की बैठकों की खूबी कैसे बताई जाए?

जेता बाग ऊपर, तेता तले विस्तार।
चारों खूटों बराबर, ए सिफत न आवे सुमार।। ६५ ।।

जैसा बाग ऊपर फूलबाग है वैसा ही बाग नूरबाग है। नीचे का लम्बा-चौड़ा बराबर है। इसकी सिफत बेशुमार है।

अति खूबी बाग ऊपर, तले तिनसे अधिकाए।
वह खूबी इन मुख से, मोपे कही न जाए।। ६६ ।।

ऊपर वाले बाग की खूबी अधिक है और नीचे वाले बाग की उससे भी अधिक है। यहां मेरे मुख से उसका वर्णन नहीं होता।

बाग पांच पांच हांसके, हैं दस बाग हांस पचास।
यों मोहोलातें सौ बाग की, कहूं किन विध खूबी खास।। ६७ ।।

पांच-पांच हांस (१५० मन्दिर) के दस बगीचे हैं। इस तरह से पचास हांस की लम्बी-चौड़ी शोभा बनती है जिसके सौ बगीचे हुए। इन सौ बागों की खूबी कैसे कहूं?

चारों तरफों चलती, नेहेरें बीच बाग के।
बीच मेहेरावों से देखिए, सोभित बिरिखों तले।। ६८ ।।

बगीचों के बीच चारों तरफ नहरें चलती हैं और बड़े वन के वृक्षों की मेहराब से देखें तो शोभा बेशुमार है।

पचास हांस तरफ बाग के, हर हांसें तीस मन्दिर।
मेहेराव बीच झरोखा, तीन तीन सबों अन्दर।। ६९ ।।

रंग महल के पच्छिम दिशा के पचास हांस में तीस-तीस मन्दिर आए हैं। एक मन्दिर में दो-दो मेहराब और एक-एक झरोखा शोभा देता है।

Nijanand App

इन हांस चेहेबच्चे से चलिए, दूसरे पोहोंचिए जाए।
मोहोल मेहेरावों देखिए, बाग इतथें और सोभाए।।७० ।।

रंग महल के नैरित कोने के चहबच्चे से चलकर वायब कोने के चहबच्चे के कोने तक पहुंचें। बीच में रंग महल की मेहराबों को देखिए तो इन मेहराबों से बाग की शोभा अधिक दिखाई देती है।

एक एक मन्दिर में आए के, फेर देखिए गिरदवाए।
इन विध रूहें देखिए, उलट अंग न समाए।।७१ ।।

रंग महल एक-एक मन्दिर से घूमकर देखें तो अंग में खुशी समाती नहीं है, ऐसी शोभा है।

ए बाग मेहेराव देख के, आए बड़े चेहेबच्चे।
आया आगूं लाल चबूतरा, खूबी किन विध कहूं मैं ए।।७२ ।।

यहां के बाग और मेहराब देखकर वायब कोने के बड़े चहबच्चे के पास आए और आगे उत्तर दिशा में लाल चबतूरे की शोभा की हकीकत कैसे कहूं?

चालीस हांसों चबूतरा, बड़े मेहेराव इन पर।
देख देख के देखिए, खूबी क्यों कहूं इन चबूतर।।७३ ।।

लाल चबूतरा चालीस हांस में है और इसके ऊपर बहुत मेहराब आए हैं। चबूतरे की खूबी अद्‌भुत है।

तीन हजार छे सै बने, मेहेराव बराबर।
सोभा हांसों चालीस, इन जुबां कहूं क्यों कर।।७४ ।।

रंग महल के एक-एक मन्दिर में तीन-तीन मेहराब होने से तीन हजार छः सौ मेहराब इन चालीस हांसों में आए हैं। इनकी शोभा कैसे बयान करें?

ए ठौर सोभा अति बड़ी, और बन विस्तार।
ए ठौर बैठक बड़ी, पसु पंखी खेलें अपार।।७५ ।।

इस लाल चबूतरे के ऊपर चालीस सुन्दर बैठकें बनी हैं। आगे बड़े वन का विस्तार है। यहां पर पशु-पक्षी बेशुमार खेल खेलते हैं।

अति खूबी आगूं कठेड़े, हांसों चालीसों सोभित।
देखत अर्स आंखन सों, खूबी उत जुबां बोलत।।७६ ।।

चालीस हांसों के आगे लाल चबूतरे पर सुन्दर कठेड़ा शोभा देता है। परमधाम की आंखों से देखकर वहीं की जबान से इस शोभा का बयान हो सकता है।

जुदी जुदी जिनसों सोभित, जुदी जुदी जिनसों फल फूल।
पात रंग जुदी जिनसों, देख देख होइए सनकूल।।७७ ।।

यहां की शोभा अलग-अलग तरीके की है। फल, फूल, पत्ते, रंग सब देखकर मन बहुत प्रसन्न होता है।

हर मन्दिर माहें आए के, चढ़िए हर झरोखे।
जब आइए हर झरोखे, तब खूबी देखो बाग ए।।७८ ।।

लाल चबूतरे की ऊपर की भोमों में आकर झरोखे में चढ़कर देखें तो सामने बड़े वन के सुन्दर ग्यारह भोम ऊंचे पेड़ दिखाई देते हैं।

Nijanand App

बड़े मेहेराव बराबर, एक दूजे को लगता।
हांस चालीस ऊपर चबूतरे, सोभा न आवे सब्द में बका।।७९ ।।

लाल चबूतरे के ऊपर के एक-एक मन्दिर की तीन-तीन बड़ी मेहराबें आई हैं, जिनकी शोभा शब्दों में नहीं कही जाती।

एह भोम एह चबूतरा, लगते पेड़ दरखत।
ए ठौर बरनन करते, हाए हाए छाती नाहीं फटत।।८० ।।

इस भोम की तथा इस चबूतरे की और साथ में लगते पेड़ों की शोभा वर्णन करने में हाय! हाय! छाती फट क्यों नहीं जाती?

आगूं भोम चबूतरे, चारों तरफों चौगान।
गिरदवाए परे पुखराज के, जिमी रोसन खेलें रेहेमान।।८१ ।।

चबूतरे के आगे वनों की शोभा पुखराज पहाड़ तक घेरकर आई है। जहां की जमीन पर श्री राजजी महाराज खेलते हैं।

जिमी ऊंची नीची कहूं नहीं, बराबर एक थाल।
पसु पंखी सब में खेल हीं, ए खेलौने नूर जमाल।।८२ ।।

जमीन ऊंची-नीची कहीं नहीं है। सब एक समान समतल है। इन सबमें पशु-पक्षी खेल करते हैं जो श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं।

बड़ा बन ऊंचे हिंडोले, तले हाथी जात आवत।
कहूं केते बड़े जानवर, इन चौगान खेल करत।।८३ ।।

बड़े वनों में ऊंचे-ऊंचे हिंडोले हैं जिनके नीचे हाथी आते-जाते हैं और कितनी ही बड़े जानवर इन अखाड़ों में खेल करते हैं।

बाघ केसरी चीते खेलहीं, और मोर मुरग बांदर।
हर जातें जातें कई जिनसें, कहूं कहां लग खेल जानवर।।८४ ।।

बाघ, केसरी (सिंह), चीता, मोर, मुर्गा, बन्दर हैं और कहां तक कहूं? कई जातियों के जानवर खेलते हैं।

हर जिनसें कई खेलत, एक एक में खेल अपार।
खेलें कूदें नाचें उड़ें, गावें कई विध जुबां न सुमार।।८५ ।।

हर जाति के जानवर कई प्रकार के खेल खेलते हैं। जहां कई कूदकर, कई नाचकर, कई उड़कर, कई गाकर, खेल खेलते हैं जो जबान से कहा नहीं जा सकता।

इन मुख सोभा क्यों कहूं, और क्यों कहूं सोभा जिकर।
सोभा पर चित्रामन, ए जुबां फना कहे क्यों कर।।८६ ।।

इस मुख से इस हकीकत की शोभा का वर्णन कैसे कहूं? इन पशु-पक्षियों के चित्रों की शोभा का वर्णन मिटने वाली जबान से कैसे हो?

Nijanand App

सोभा कही न जाए दरखतों, और कही ना जाए इन भोम।
जो देखो सोभा पसुअन की, करे रोसन अति एक रोम।। ८७ ।।

वृक्षों की, इस भोम की, पशु-पक्षियों की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता। इनका एक-एक रोम तेज मयी है।

कई नाचत नट बांदर, कई बाजे बजावत।
ए खेलौने हक हादीय के, केहेनी जुबां क्यों पोहोंचत।। ८८ ।।

कई बन्दर नट का खेल करते हैं, कई बन्दर बाजे बजाते हैं। यह श्री राज श्यामाजी के खिलौने हैं, इनकी शोभा कहनी में नहीं आती।

चढ़ ऊंचे लेत गुलाटियां, फेर गुलाटियों उतरत।
ए नट विद्या बहुविध की, क्यों कर करूं सिफत।। ८९ ।।

यह बन्दर गुलाटियां लेते हुए ऊपर चढ़ते हैं तथा गुलाटियां लेते हुए नीचे उतरते हैं। यह तरह-तरह की नट विद्या का खेल करते हैं तो इनकी सिफत का बयान कैसे करें?

कूदत फांदत नाचत, लेत भमरियां दे पड़ताल।
नई नई विद्या देख के, हक हादी रूहें होत खुसाल।। ९० ।।

कई बन्दर कूदते हैं, कई नाचते हैं, कई छलांगें लगाते हैं, कई भमरी खाकर पैरों की पड़ताल देते हैं, ऐसी नई-नई कलाएं देखकर श्री राजश्यामाजी और रूहें खुश होती हैं।

चढ़ कूदें कई दरखतों, पेड़ पेड़ से पेड़ ऊपर।
तले जो अंत्रीख आए के, फिरत चढ़त ऊंचे उतर।। ९१ ।।

कई बन्दर कूदकर वृक्षों पर चढ़ते हैं, कई एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाते हैं, कई ऊपर से नीचे आकर फिर ऊपर चढ़ते हैं।

जंत्र बेन बजावहीं, रबाब ताल मृदंग।
अमृत सारंगी झरमरी, झांझ तंबूरा चंग।। ९२ ।।

कई बन्दर यन्त्र, बांसुरी, रबाब, करताल, मृदंग, झरमरी (करताल की झाल) झांझ, तंबूरा, चंग (खंजड़ी) तथा मीठे स्वर में बोलने वाली सारंगी बजाते हैं।

सरनाई भेरी नफेरी, और बाजे कई बजाए।
तुरही रनसिंघा महुअर, और नगारे करनाए।। ९३ ।।

कई शहनाइयां, भेरी, नफेरी, तुरही, रणसिंघा, महुवर, नगाड़े, और लम्बे बिगुल, आदि कई तरह के बाजे बजाते हैं।

लेत तले से गुलाटियां, चढ़त जात आसमान।
उतरें भी गुलाटियों, फेर फेर गुलाटों दे तान।। ९४ ।।

बन्दर नीचे से गुलाटियां खाते हुए आसमान तक चढ़ते हैं और फिर गुलाटियां खाते हुए बाजों की तान के साथ नीचे उतरते हैं।

Nijanand App

अंत्रीख मिने गुलाटियां, देत जात फिरत।
इन विध लेत भमरियां, यों कई विध केलि करत।। ९५ ।।

कई अधबीच से गुलाटियां खाते हुए घूम जाते हैं और कई भंवरी फिरकर तरह-तरह के खेल करते हैं।

देखो बन्दर खेल अर्स में, बड़ा देख्या अचरज ए।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, हक हादी आगूं होत है जे।। ९६ ।।

परमधाम के इन बन्दरों का खेल बड़ा अदभुत होता है जो श्री राजश्यामाजी और रूहों के आगे उनको प्रसन्न करने के लिए करते हैं। उसकी खूबी कैसे कहूं?

ए नट विद्या कई नाचत, बाजे दिल चाहे बजावत।
ए खेल अचम्भा देख के, हक हादी रूहें राचत।। ९७ ।।

कई बन्दर नट विद्या से, कई नाचकर, कई दिल चाहे बाजे बजाते हैं। इनके इस चकित करने वाले खेल को देखकर श्री राजश्यामाजी और रूहें बड़े खुश होते हैं।

इत आगूं लाल चबूतरे, भोम क्यों कहूं बन विस्तार।
खेल पसु पंखियन को, जुबां कहे जो होवे कहूं पार।। ९८ ।।

इस लाल चबूतरे के आगे वन की भोम का विस्तार कैसे बताऊं? पशु-पक्षियों के खेल का जबान तब वर्णन करे जब इनकी कोई सीमा हो।

बाघ केसरी खेलहीं, चीते खेलें सियाहगोस।
सब विद्या अपनी साधहीं, सब खेलें इस्क के जोस।। ९९ ।।

बाघ, केसरी, सिंह चीता, सियार (गीदड़) सब अपनी-अपनी कलाओं से इश्क के जोश में खेलते हैं।

हर खांचें जातें जुदी जुदी, आप अपनी विद्या खेलत।
गाए नाचें जिकर करें, हर भांतें रूहों रिझावत।। १०० ।।

हर अखाड़े में अपनी अलग-अलग जातियों के अपनी-अपनी कलाओं से गाकर, नाचकर और जिक्र कर रूहों को रिझाते हैं।

हाथी घोड़े बैल बकर, साम्हर चीतल हरन।
मेढ़े पाड़े पस्वड़े, कई खेलें ऊंट अरन।। १०१ ।।

हाथी, घोड़े, बैल, गाय, साम्हर, चीता, हिरन, भेड़, पाड़ा (भैंसा) ऊंट, और जंगल के कई जानवर खेलते हैं।

चालीस हांसों की ए कही, करें आप अपना खेल।
छोड़ें न हांस मरजादा, हक आगे करें सब केलि।। १०२ ।।

यह सब इन चालीस हांसों के अखाड़ों में अपना-अपना खेल दिखाते हैं और अपने-अपने अखाड़े से बाहर नहीं जाते। सब श्री राजजी महाराज के आगे खेलते हैं।

दस हांसें बाकी रही, ताके मंदिर झरोखे।
तित ढिग दो दो मेहेराव, खूबी लेत बन पर ए।। १०३ ।।

उत्तर की दिशा में बाकी दस हांसों के मन्दिर में झरोखे हैं। इनके पास दो-दो मेहराबें हैं। जिनकी खूबी ताड़बन में शोभा देती है।

Nijanand App

एक सौ दस छेल्ली हार के, ए जो मोहोल भुलवनी के।
एक सौ दस चारों तरफों, ए जो बारे हजार कहे।। १०४ ।।

मन्दिर की दूसरी हार के बाद एक सौ दस मन्दिरों की एक सौ दस हारें, अर्थात् बारह हजार एक सौ मन्दिर भुलवनी के आए हैं। मध्य में सौ मन्दिर का कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है जिस पर श्री राजश्यामाजी का सिंहासन है।

चबूतरे चेहेबच्चे लग, बीच चालीस मन्दिर।
चालीस चेहेबच्चे परे, अस्सी बीच तीस अन्दर।। १०५ ।।

लाल चबूतरे से खड़ोकली तक चालीस मन्दिर आते हैं और चालीस ही मन्दिर खड़ोकली के पूरब दिशा, दूसरी तरफ आते हैं। इन अस्सी मन्दिरों के बीच में तीस मन्दिर की खड़ोकली है। इस तरह से एक सौ दस मन्दिर हुए।

तीस चेहेबच्चे ऊपर, बने जो झरोखे।
चार चार द्वार हर मन्दिरों, मुख क्यों कहूं सोभा ए।। १०६ ।।

खड़ोकली के चहबच्चे के सामने तीस मन्दिरों के तीस झरोखे आए हैं और हर मन्दिर में चार-चार मेहरावें हैं। इनकी शोभा इस मुख से कैसे कहूं?

इत लगते जो मन्दिर, हारें भुलवनी।
केहे केहे मुख कहा कहे, सोभा अतंत घनी।। १०७ ।।

इन मन्दिरों के सामने ही भुलवनी के मन्दिरों की हारें हैं जिनकी शोभा बहुत अधिक है। इस मुख से कहां तक कहें?

छे हांस ऊपर दस मंदिर, हांसें पोहोंची लग पचास।
एक झरोखा दो मेहेराव, ए जो फिरती खूबी खास।। १०८ ।।

इस भुलवनी के मन्दिर के आगे पूरब दिशा में जहां तक पचास हांस होते हैं, एक सौ नब्बे मन्दिर आए हैं। उनमें एक-एक झरोखा और दो-दो मेहरावों की खूबी आई है।

ए मोहोल फिरते बन ऊपर, ए जो सोभा लेत हैं इत।
बन झरोखे सोभा तो कहूं, जो होए निमूना कहूं कित।। १०९ ।।

इन मन्दिरों के सामने ताड़वन की शोभा है। इस वन की तथा झरोखों की शोभा का वर्णन तब हो सकता है जब कोई नमूना हो।

ए जो घाट अनार का, आए मिल्या दिवाल।
ए खूबी क्यों कहूं इन जुबां, रूह देखत बदले हाल।। ११० ।।

पूरब दिशा में अनार का घाट रंग महल की दीवार को लगता है। जिसकी खूबी देखकर रूहों की हालत बदल जाती है।

घाट लिबोई हिंडोलों, आए मिल्या इत ए।
खूबी ताड़ बन की, क्यों कहूं बल जुबां के।। १११ ।।

इस अनार घाट से उत्तर की तरफ लिबोई का घाट तथा पच्छिम में ताड़वन के हिंडोले आए हैं। ताड़वन की खूबी यहां की जबान से कैसे कहूं?

Nijanand App

केल बन आगूं चल्या, मधु बन मिल्या आए।
इत सोभा बड़े बन की, इन अंग मुख कही न जाए।। ११२ ।।

लिबोई वन के आगे केले का वन है और उसके आगे मधुवन आकर मिलता है। इस बड़े वन की शोभा यहां के मुख से कैसे हो?

और हांसें पचास जो, आगूं बड़े दरबार।
सोभित झरोखे मेहेराव, आगूं चौक सोभे बन हार।। ११३ ।।

रंग महल के आगे पचास हांस हैं जिनके अन्दर झरोखे और मेहराब की शोभा है। आगे चांदनी चौक और वनों की हारें दिखाई देती हैं।

ए जो बड़ी कही पड़साल, ऊपर बड़े द्वार।
दोऊ तरफों तले दस थंभ, एक एक रंग के चार चार।। ११४ ।।

धाम-दरवाजे के ऊपर तीसरी भोम में छज्जे के ऊपर बड़ी पड़साल आई है। इस पड़साल के नीचे दोनों तरफ दस-दस थंभ आए हैं जिनमें एक-एक रंग के चार-चार थंभ हैं।

सामी दस थंभ दिवाल में, करे जोत जोत सो जंग।
बीस थंभ रंग रंग मुकाबिल, तिन रंग रंग कई तरंग।। ११५ ।।

दस थंभ दीवारों में अक्सी है, जिनकी तरंगें आमने-सामने टकराती हैं। चबूतरे के यह बीस थंभों के रंग आमने-सामने एक से हैं। उनमें कई रंगों की तरंगें उठती हैं।

जो थंभ आगूं द्वार ने, अति उज्जल हीरों के।
दोऊ तरफों जोड़े चार थंभ, ए चारों मानिक रंग लगते।। ११६ ।।

दरवाजे के दोनों तरफ चार थंभ हीरों के हैं। उन चारों थंभों के बाद चार थंभ माणिक के आए हैं।

तिन जोड़े भी चार थंभ, सो पीत रंग पुखराज।
तिन परे चारों पाच के, दोऊ तरफों रहे बिराज।। ११७ ।।

माणिक से आगे चार थंभ पीले रंग पुखराज के आए हैं और उनके आगे चार थंभ पाच के (हरे रंग के) शोभा देते हैं।

चारों खूंटों थंभ नीलवी, सोभा लेत इत ए।
पांच थंभों के लगते, हुए बीस दस जोड़े।। ११८ ।।

चारों कोने के चार थंभ नीलवी (नीलम) के शोभा लेते हैं। इस तरह से पांच रंग के थंभों के दस जोड़े, अर्थात् बीस थंभ हैं।

ए बीस थंभों का बेवरा, इनों क्यों कहूं रोसन नूर।
कटाव किनारे कांगरियों, क्यों कहूं इन द्वार जहूर।। ११९ ।।

इन बीस थंभों के तेज का कैसे बयान करूं? इनके किनारे पर कांगरी और कटाव बने हैं जिसकी शोभा और बढ़ गई है।

Nijanand App

चार चार मेहेराव दाएं बाएं, आठ हुए तरफ दोए।
सोभा आगूं बड़े द्वार के, सो इन मुख खूबी क्यों होए।। १२० ।।

चार-चार मेहराब दाएं-बाएं हैं, इसलिए इसमें कुल १०८ मेहेराब हुए। इस बड़े दरवाजे के आगे की शोभा इस मुख से कैसे कहूं?

दोऊ तरफ दोए चबूतरे, ए जो लगते दिवाल।
तीनों तरफों कठेड़ा, क्यों देऊं इन मिसाल।। १२१ ।।

दीवार को लगते हुए दोनों तरफ यह दो चबूतरे हैं, जिनके तीन तरफ कठेड़ा है। इनका नमूना कैसे बताऊं?

कठेड़ा रंग कंचन, जानों के मीना माहें।
सोभा लेत थंभ कठेड़े, ए केहे न सके जुबांए।। १२२ ।।

कठेड़ा कंचन रंग का है, लगता है मीनाकारी कर रखी है। यहां के कठेड़ों की सुन्दर शोभा है जो इस जबान के कहने में नहीं आती।

कई रंग जवेर चबूतरों, कई दिवालें रंग नंग।
ऊपर तले का नूर मिल, करत अंबर में जंग।। १२३ ।।

चबूतरों में कई रंग के जवेर (जवाहरात) झलक रहे हैं। इसी तरह से दीवारों में कई तरह के रंग के नग जड़े हैं। ऊपर, आगे, नीचे की दोनों की तरंगों की रोशनी आकाश में टकराती है।

ए अर्स नूरजमाल का, तिन अर्स बड़ा दरबार।
एह जोत आकास में, मावत नहीं झलकार।। १२४ ।।

यह श्री राजजी महाराज का बड़ा दरबार है जिसके नूर का तेज आकाश में नहीं समाता।

आठ भोम इन ऊपर, तिन आठों भोम पड़साल।
जाए पोहोंच्या लग चांदनी, ऊपर गुमटियां लाल।। १२५ ।।

दरवाजे के ऊपर आठ भोम में आठ पड़सालें आई हैं जो ऊपर चांदनी तक हैं। उसके ऊपर लाल लाल गुमटियां हैं।

ए सोभा अचरज अदभुत, जानें अर्स अरवाए।
इन भोम रूह सो जान हीं, जिन मोमिन कलेजे घाए।। १२६ ।।

शोभा बड़ी चकित करने वाली अदभुत है। उसे अर्श की रूहें जानती हैं उन्हीं के कलेजों में इन वचनों को सुनकर घाव लगते हैं।

आगूं तले चौक चांदनी, उतर जाइए सीढ़ियन।
आगूं दोए चबूतरे चौक के, ऊपर हरा लाल दोऊ बन।। १२७ ।।

आगे नीचे चांदनी चौक है, जहां पर सीढ़ियों से उतरकर जाएं। चांदनी चौक में दो चबूतरे हैं जिनके ऊपर हरे और लाल वृक्ष आए हैं।

इत सोभा चौक चांदनी, इन मोहोलों मुजरा जानवर।
इन जुबां खूबी क्यों कहूं, ए जो बन में करें जिकर।। १२८ ।।

इस चांदनी चौक में जानवर मुजरा (दर्शन, प्रणाम) करने आते हैं और वह आपस में जो जिक्रे सुभान करते हैं, उसकी महिमा कैसे बताएं?

Nijanand App

ए जो रस्ता बन का, जोए जमुना लग किनार।
सात घाट दोए पुल बीच में, कई चौक बने कई हार।। १२९ ।।

रंग महल के दरवाजे से बिल्कुल सामने से अमृत वन में होते हुए सीधा जमुनाजी तक रास्ता जाता है। सात घाट और दोनों पुलों के बीच में कई-कई चौक की हारें आई हैं।

द्वार सामी पाट घाट का, सो रस्ता बराबर।
जोए परे रस्ता नूर लग, आवे साम सामी द्वार नजर।। १३० ।।

रंग महल के दरवाजे के सामने का रास्ता बराबर सीधा पाट घाट तक जाता है और जमुनाजी के पार सीधा अक्षरधाम तक जाता है। इस तरह परमधाम और अक्षरधाम के दरवाजे आमने-सामने हैं।

ऊपर पाट चौक चांदनी, चारों खूटों अति सोभाए।
नंग जंग करें रंग पांच के, बारे थंभ गिरदवाए।। १३१ ।।

पाट घाट के ऊपर चौरस चांदनी है जिसके चारों खूंटों की अधिक शोभा है। यहां बारह थंभ पांच रंग के नगों के शोभा देते हैं जिनकी तरंगें आपस में टकराती हैं।

चारों तरफों थंभ दो दो, जानों बने चार द्वार।
मानिक हीरे पाच पोखरे, ए चारों द्वार नंग चार।। १३२ ।।

चारों तरफ दो-दो थंभों से बने माणिक, हीरा, पाच, पुखराज के नगों के चार दरवाजे शोभा देते हैं।

नूर दिस थंभ दोए मानिक, बट दिस हीरा थंभ दोए।
दोए थंभ पाच दिस अर्स के, थंभ पोखरे केल दिस सोए।। १३३ ।।

अक्षरधाम की तरफ दो थंभ मानिक के हैं। बट घाट की तरफ दो हीरे के हैं। रंग महल की तरफ दो थंभ पाच के हैं और केल के घाट की तरफ दो थंभ पुखराज के हैं।

चार थंभ चार खूंट के, नीलवी के झलकत।
ए बारे थंभों का बेवरा, माहें जल सों जंग करत।। १३४ ।।

चार कोने के चार थंभ नीलवी के झलकते हैं। इस तरह से इन बारह थंभों का प्रतिबिम्ब जल में पड़ता है।

सोभा लेत अति कठेड़ा, ऊपर ढांप चली किनार।
सोभा जल में झलकत, जल नंग तरंग करे मार।। १३५ ।।

किनारे पर सुन्दर कठेड़ा है और जमुनाजी के तीन घड़नाले नीचे से जाते हैं। ढके जल में प्रतिबिम्ब की तरंगें लहरों के साथ टकराती हैं।

ए दोऊ द्वार के बीच में, भरी जोत जिमी अंबर।
और उठत जोत बन की, नूर अर्स कहूं क्यों कर।। १३६ ।।

रंग महल और अक्षरधाम के बीच में दोनों तरफ के पाट घाट की जोत आकाश में टकराती है। वन की जोत उठती है। अक्षरधाम और रंग महल की तरंगों का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

नूर और नूरतजल्ला, आकास जिमी सब नूर।
देत देखाई सब नूरै, नूर जहूर भर पूर।। १३७ ।।

अक्षरधाम और परमधाम की जमीन और आकाश सब नूर का है, इसलिए जहां तक नजर डालो दूर तक नूर ही नूर दिखाई देता है।

सब्द न अब आगे चले, जित पर जले जबराईल।
इत आवें रूहें अर्स की, जो होए अरवा असील।। १३८ ।।

अब आगे की शोभा वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिलते। यहां जबराईल फरिश्ता भी कहता है कि मेरे पर जलते हैं, आगे नहीं जा सकता। यहां पर परमधाम की रहने वाली असल रूहें ही आती हैं।

महामत कहे सुनो मोमिनों, ए अर्स नूरजमाल।
एही अर्स अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल।। १३९ ।।

श्री महामतिजी जी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो यह अक्षरातीत नूरजमाल का घर है। इसी को अर्शे अजीम कहते हैं और इसी महल में अनोखी रूहें रहती हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ १९५६ ॥

नूर परिकरमा अंदर दस भोम ।। मंगला चरन ।।

बड़ीरूह रूहें नूर में, लें अर्स नूर आराम।
नूरजमाल के नूर में, नूर मगन आठों जाम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर में आठों पहर श्री श्यामाजी महारानी और सखियां अखण्ड घर परमधाम में रात-दिन सुख में रहती हैं।

तिनका जरा सब नूर में, नूर जिमी बिरिख बाग।
नूर फल फूल पात नूर, रूहें निसदिन नूर सोहाग।। २ ।।

परमधाम के जरा से तिनके से लेकर जमीन, वृक्ष, बाग, फल, फूल, पत्ता सब नूर का ही है। जहां सखियां नित्य आराम से रहती हैं।

नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग।
नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूं नूर के रंग।। ३ ।।

जमुनाजी का किनारा, जल की तरंगें, जल पर बनी मोहोलातें सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं। नूर के रंगों का कैसे बयान करूं?

नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल।
नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल।। ४ ।।

कुंज, निकुंज, वन, जमीन, जल, हौज कौसर, तालाब, टापू महल और पाल के महल सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं।

नूर जल किनारे सीढ़ियां, नूर चबूतरा गिरदवाए।
नूर मोहोल मेहेराव फिरते, नूर झांई जल में बनराए।। ५ ।।

सागर के किनारे की सीढ़ियां, चबूतरा, महल, मेहराब जो घूमकर आए तथा वनों के, जल पर पड़ने वाले प्रतिबिम्ब सभी नूर के हैं।

Nijanand App